यु.जी.सी. द्वारा आयोजित द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग

विविध विधाओं के संदर्भ में

प्रधान संपादक

प्रो. सीताराम के. पवार

हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

"समकालीन हिन्दी साहित्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग"
(Collective Essays Presented at International Conference on "FARMERS AND LABOURS STRUGGLES IN THE CONTEMPORARY HINDI LITERATURE")

प्रधान संपादक – प्रो. सीताराम के. पवार

© : प्रधान संपादक

प्रकाशक : इन्टरनैशनल पब्लिकेशन, कानपुर (उ.प्र)

मुद्रक : श्री रेणुका प्रेस, लाईन बजार, धारवाड.

वर्ष : 2017

पृष्ठ : 667+VIII

ISBN : 978-81-928158-6-2

मूल्य : ₹ 850/–

सभी हक सुरक्षित है (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल, सहमत होंगे ही ऐसा नहीं है ।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं । अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशन इसके लिए जिम्मेदार नहीं है ।

26	कृषक जीवन का लेखा जोखा : गोदान के संदर्भ में	डॉ. कल्पना देशपांडे	111
27	'पथर कटवा' उपन्यास में मजदूरों की समस्या	डॉ. सी.एन.होम्बाली	112
28	समकालिन भारतीय साहित्य में श्रमजीवि होटल गायिका की रचना : बारबाला	डॉ.शशिकांत सोनवणे	115
29	"समकालीन हिंदी कविता में किसान की एक सर्वेक्षण"	प्रतीक माली	121
30	समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य में किसान और मजदुर संघर्ष	Dr. Surekha A. Belagali	126
31	समकालीन हिन्दी साहित्यः किसान एवं मजदूर समकालीन हिन्दी कहानी : किसान एवं मजदूर	डॉ. भारती एच. दोडमनी	128
32	किसान और मजदूर की व्यथा – कथा को वाणी देनेवाले प्रमुख समकालीन हिंदी कहानीकार"	डॉ.ए.डी.चावडा	131
33	समकालिन हिन्दी साहित्य:किसन एवं मजदूर / श्रमिक समकालिन हिंदी नाटक : किसान एवं मजदूर / श्रमिक	प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर	137
34	समकालिन काव्य : किसान एवं श्रमिक वर्ग	डॉ. चंद्रप्रकाश. क. गु	144
35	इदन्नमम: विस्थापित किसान और मजदूर की दाँस्तान.	डॉ. किरण पोपकर	146
36	किसान और श्रमिक वर्ग का पतिनिधि ओम प्रकाश वाल्मिकि	डा महादेवी प कणवी	149
37	'समकालीन हिंदी काव्य : किसान एवं मजदूर'	डॉ. महेश बिरादार	152
38	रामदरष मिश्र के उपन्यास में किसानों की आर्थिक दषा का चित्रण	प्रा. डॉ. मिलिंद साळव	156
39	समकालीन हिंदी साहित्य–कहानी: किसान एवं मजदूर/श्रमिक वर्ग	डॉ. नागरत्ना एम.	162
40	'प्रेमचन्द और भारतीय किसान '	डॉ. पजे. सेन्दामर	166
41	"समकालीन हिन्दी कहानी साहित्य में 'किसान एंव मजदूर वर्ग' का संघर्ष"	डां प्रशांतिनी. पी. मरली	169
42	समकालीन हिन्दी काव्य में श्रमिक–जीवन	डॉ. आर. श्रीदेवी	171
43	उपन्यास 'आवां' में मजदूरों का जीवन	डॉ. रजियाबेगम एफ्. शेख	173
44	समकालीन हिन्दी काव्य में किसान एवं मजदूर	डॉ. व्ही. आई. शेख	178
45	हिन्दी कविता : किसान एवं मजदूर जीवन तथा विप्लव का चित्रण	डॉ. बबन सातपुते	182
46	संजीवजी का उपन्यास 'सर्कस' में चित्रित–श्रम जीवन	डॉ. जयलक्ष्मी एफ्. पाटील	186
47	हिन्दी समकालीन कविता या साठोत्तरी कविता	डॉ. हेच. रमा देवी	188
48	हिंदी उपन्यासों में किसानों का बदलता स्वरुप	डॉ. सचिन गपाट	191
49	समकालीन हिंदी कहानी में किसान और मज़दूर	डॉ. राजीव. एस. हिरेमठ	195
50	भारतीय किसान की गाथा 'जमीन'	डॉ. सदाशिव जे. पवार	197
51	अरुण कमल की कविताओं में श्रमिक वर्ग	प्रो. सुनील. बा तार्टे	200
52	किसान जीवन की महान घोकांतिका : 'बारोमास'	प्रा. रगडे पी. आर	203
53	समकालीन हिंदी कविता में किसान एवं श्रमिक वर्ग	नीता पाटील	207

54	समकालीन हिंदी कविता
55	उशा प्रियंवदा के उपन्यास महिलाओं का चित्रण
56	'धार' उपन्यास में श्रमिक "नरक कुंड में बास" उपन
57	समकालीन कविताओं
58	समकालीन हिन्दी कहा
59	मजदूरों की कथा–व्यथ
60	प्रेमचंद के कथा साहि श्रमिक वर्ग
61	'पुरस्कार' कहानी में वर्ग का संघर्ष
62	समकालीन हिन्दी उपन वर्ग का संघर्ष
63	केदारनाथ अग्रवालजी एवं मजदूर वर्ग
64	समकालीन उपन्यास का जीवन–संघर्ष
65	डॉ. श्री आरिगपूडि के एवं श्रमिक वर्ग
66	समकालीन हिंदी कविता वर्ग के जीवन का यथार्थ
67	समकालीन हिन्दी नाटको
68	नवपूँजीवादी दौर में बेदख श्रमिक एवं मजदूर
69	समकालीन हिंदी उपन्य
70	बीसवीं शताब्दी के अं उपन्यासों में श्रमिक ज
71	अशोक वाजपेयी के क और मजदूर
72	समकालीन उपन्यास ' में किसान वर्ग
73	हिन्दी साहित्य में किसा
74	केदारनाथ अग्रवाल की श्रमिक एवं किसान वर्ग
75	समकालीन हिंदी उपन्या
76	मलखान सिंह के हिंदी क में चित्रित दलित मजदूर
77	मन्नू भंडारी के कथा–स
78	बाल श्रमिक व किसानों यथार्थवादी नाटक ! जा

भारतीय किसान की गाथा 'जमीन'

डॉ. सदाशिव जे. पवार

इतिहास की ओर एक नजर डालेंगे तो मस्तिष्क में एक चित्र उभर आता है वह यह की संसार का जन्म खास करके मानव की निर्मिती और किसान की निर्मिती दोनों का जन्म एक ही समय हुआ। भले ही आज नौकरों का एक वर्ग अपने आप को उच्च समझता होगा लेकिन उनका इतिहास यह बतात है कि कही-ना-कही उनके पूर्वज किसान थे। आज किसानों पर राज व्यापारीयों का और नौकरदारों का दिखाई दे रहा है। वे इन किसानों पर जो अन्याय कर रहे हैं, उनका शोषण कर रहे हैं इसमें उनकी भलाई नहीं बल्कि उनका नुकसान ही होनेवाला है। यह शोषण सदियों से हम अपने साहित्य में पढते आये हैं। उसमें खासकर करके प्रेमचंद का साहित्य। इस साहित्य को पढते समय पाठकों के मन में किसान प्रति दयाभाव उद्‌भव होता है। मात्र वह कुछ ही क्षणों में नष्ट भी हो जाता है। हमारे साहित्यिक इन भावनाओं को जीवित रखने कार्य इन साहित्य के द्वारा किया है। उसमें भीमसेन त्यागी जी एक है। जिन्होंने अपने उपन्यास 'जमीन' में भारतीय किसान की गाथा को हुबहु चित्रित किया है।

"बरसात आती है तो किसान के घर में सूखा पड जाता है। ईख के पैसे तो पहले ही ठिकाने लग जाते हैं, बरसात आते-आते अनाज के दाने भी किनारे आ लगते हैं। दस रूपये का खर्चा भी आ जाए तो किसी के सामने हाथ फैलाना पडता है।"१

"गाँव गाँव में उम्मीदवारों के दफ्तर खुल गए। दारू के ड्रम आने लगे। देशी घी भी की कडाहियाँ चढ गयी। गरम-गरम पूडियाँ उतरने लगीं। गरीब-गरबीओं की मौज आ गई। वोट तो जिसे देना होगा, दे लेना। अब तो छककर दारू पीयो और पूडियाँ उठाओ। धन्न भाग! भगवान करे इलेक्शन .....महाराज हर साल आएँ!"२

आजादी से मोहभंग के ये विभिन्न चित्र पिछली शती के पचास-साठ के दशक की जमीनी हकीकत के दस्तावेज बनते हैं जिन्हें पूरी बारीकी से भीमसेन त्यागी ने अपने उपन्यास 'जमीन' में प्रस्तुत किया है।

उपन्यासकार अपने वृतांत को जो इतना सहज और प्रामाणिक रूप से दे सका है, उसका एक बहुत बडा कारण इन स्थितियों का चश्मदीद गवाह होना है। धीरे-धीरे वह पीढी अवसान की ओर है। जिसने आजादी के ठीक पहले और बाद की स्थितियों को इतने निकट से देखा-भोगा अंनुभव किया है। भीमसेन त्यागी की स्मृति में सन् १९४२ का भारत छोडों आंदोलन भी है और अपनी किशोरावस्था से उन्होंने अपने गाँव, समाज के जिस परिवर्तनशील स्वरूप को निरखा-परखा है। आजादी आते हुए और उसके बाद के संक्रमण कालीन जिस भारतीय समाज की आशा-आकांक्षाओं और स्वप्नों को ध्वस्त होते देखा है। उसका रसपूर्ण चित्रण भी 'जमीन' उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

'जमीन' उपन्यास का पाठ इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि मेरठ-मवाना-खडीबोली का जन्म-स्थल और कौरवी जन-भाषा मा महत्वपूर्ण क्षेत्र- एक लंबी अवधी के बाद कथा का विषय बना है। सन् १८७० इसवी में पंडित गौरी दत्त का उपन्यास, 'देवरानी जेठानी की कहानी' कहानी प्रकाश में आया। जिसमें मेरठ क्षेत्र के वैश्य परिवारों को कथा का केंद्र बनाया गया था। जमीन आजादी से पहले के भारतीय गाँव समाज के उस मानस का चित्रण है जो आजादी के तरह-तरह के स्वप्न संजोए हुए था।

एक ओर ऐसी चिंताएँ थी "अंग्रेज बहुत ही बहादुर की हुकूमत में चैन की बंसी बज रही थी। पता नहीं यह कांग्रेसी सरकार उनके साथ कैसा सलुक करे।" तुम क्या जानो आजादी क्या होती है? अरे! यह तो हमसे पूछों, हमसे। हमने बड़ी-बड़ी आजादी देखी है।" जनसामान्य को लगता को लगता गोरों के पास फौज है, कांग्रेस के पास क्या फिर भला वे कैसे आजादी ले पायेंगे। जमींदारी के बोझ तले दबे किसान जिस तरीके से पड़े बिल-बिल रहे हैं और साहूकारों का कर्ज जिस रूप में उन्हें दोहरी मार दे रहा था उसका प्रभावी अंकन यहाँ हुआ है। "हर साल दशहरे पर ठाकुर चंदनसिंह महकु के अंगुठे की टीप ले लेता है। कलम की मार। बेचारा महकु कुछ नहीं समझता, उसे नहीं पता की ठाकुर का क्या लेना-देना है। बस, इतना पता है कि उसके दादा ने चंदनसिंह के दादा से दो बिस्सी और दस रूपये लिए थे। कुल जमा बीस गिनता जानता है महकु लंबा-चौड़ा हिसाब उसकी समझ में नहीं आता। समझने से फायदा भी क्या? और कुछ सुखेगा। सुद-दरसुद लगते-लगते कर्ज पहाड़ बन चुका है। महकु को मालुम है कि वह अपनी खाल बेचकर ठाकुर का कर्ज चुका नहीं सकता। फिर वह समय भी आ गया धीरे-धीरे जमींदारी समाप्त हो रही थी। अघाये हुए जमींदारों ठाकुर रौनकसिंह व चंदनसिंह की जमींदारी जा रही थी तो उनके स्थान पर कोटा परमिट की राजनीति से पनपती यह पीढ़ी आ रही थी। जिसका संकेत प्रेमचंद ने 'रंगभूमी' में यह कहकर दिया था कि 'जॉन की जगह गोविंद' ले लेंगे सच्चे कांग्रेसी भजन लाल की परेशानी है कि "आजादी की आते ही आखिर कांग्रेस को हो क्या गया? हमारे नेताओं को सत्ता की चाट लग गयी है। भगवान ही देश का रक्षक है।" लोकसभा के पहले आमचुनाव भुगतने जनता थी तो वकील जैसे मंत्रीपद तक पहुँचे नहीं कांग्रेसी कल्चर में पनपे नेताओं की एक पूरी फौज अस्तित्व में आ रही थी। उपन्यास के कथाविधान का पसरा १९६२ इसवी के चीनी आक्रमण और १९६४ इसवी पंडित नेहरू के निधन तक फैला हुआ है। नेहरू युग के अंत के साथ ही 'जमीन' की कथा अंत को प्राप्त होती है। भीमसेन त्यागी इसके बाद के कालखंड को उपन्यास के दूसरे भाग में चित्रित करना चाहते थे। किंतु इस स्वप्न को वे अपने जीवन काल में पूरा न कर सके।

उपन्यास की कथा की प्रारंभ देश को आजादी मिलने की सुगबुगाहट और सूचना से होता है सुगबुगाहट गाँवों में थी और पक्की सूचना शहरों में। अखबारों आदि के माध्यम से आजादी मिलने की खबर शहरों में पहुँच रही थी। इस सूचना से गाँवों में नवनिर्माण के स्वप्न जनता बुन रही थी। महकु चमार जैसा छोटासा आदमी यह स्वप्न इस रूप में देख रहा था, 'आजादी के आने से सब लोगों को फायदा मिलेगा। सबके दुःख-दलीदर मिट जायेंगे। हम और हमारे बच्चे सुख से रहेंगे।" किंतु आजादी के साथ ही लुटपिटकर आये शरणार्थियों के रेले और उनकी देखकर यहाँ के गाँवों में फैली सांप्रदायिकता की लहर का परिचय देती कथा आगे बढती है। इस माहौल एं कांग्रेसी मूल्यों और निष्ठा से जुडा महाशय भजनलाल आज़ादी को ठीक उसी रूप में देखना चाहते है। जिस रूप में गांधीजी ने सोचा था। वस्तुत: भजनलाल देश को आजादी के लिए लड़ने वालों की संघर्ष कथा और यातनाओं को प्रतिकिकृत करता है। उसे गाँव के सामंतवादी शक्तियों ने जो दैहिक यातनायें दी वे किसी भी नरक से कम नहीं है। गाँव की सामंतवादी शक्तियो जो दैहिक यातनायें दी वे किसी भी नरक से कम नहीं है। किंतु उन सबसे गुजरता हुआ भजनलाल का अंत तक अपनी निष्ठा और मूल्यों को नहीं छोड़ता है। उपन्यास के अंत के साथ ही भजनलाल का अंत अब सब मानवी मूल्यों और

देश की आजादी के स्वप्नों की मृत्यु का सूचक बनकर उपस्थित होता है। हिंदुस्थान के आजाद होते ही गांधीजी की हत्या, आरएसएस का गाँवों में पसारा गाँवों शांत सी झिल में सांप्रदायिकता की कंकडियों का पडना, किसान और मजदूर की गरीबी तेलंगाना का कृषक आंदोलन, चीन का आक्रमण और अंत में जवाहरलाल नेहरू का देहावसान जैसी प्रमुख घटनाओं को अपनी कथा में समेटता जमीन उपन्यास अपने विराट कथा फलक का परिचय देता है। आजादी के बाद दलितों में भी एक उच्चवर्ग का अस्तित्व में आना और अपने शेष भाईंसे घृणा गाँव में सरकारी उपक्रमों से सुधार की नयी लहर आदि पर दृष्टि डालता हुआ उपन्यासकर कथा को चीनी आक्रमण और उसके बाद पंडित नेहरू की मृत्यु तक लाता है।

यह समस्त घटना क्रम के बीच में जमींदारी प्रथा में गाँवों की दशा और बहतर किस रूप में होती जा रही थी, इसका बडा सशक्त और प्रामाणिक चित्रण यहाँ मिलता है। ठाकुर की जमींदारी में किसान और मजदूर किस प्रकार घोर गरीबी का जीवन जी रहे थे, उसका परिचय अखेला महकु दे सकता है जो "अपनी कोठरी के आगे, झोपडी में जमीन पर बैठा बाण बट रहा है। जिस पर सिर्फ आठ अंगुल चौडी लंगोठी है। जिस जली लकडी जैसा रूखा और खुरदरा जंगोल पडी उसकी चार तरह के चार पायों की चारपाई उसकी गरीबी दास्तान कहती है। कामरेड जोशी उस नायब चारपाई को देखते रह गये। उसके चारों पायें अलग-अलग नस्ल के हैं। एक खराद किया गया पाया उस जमाने का है जब यह चार पायी बनी होगी। बाकी तीन इतिहास के अलग-अलग दौर के साक्षी है। ठेईमेडी लकडियों को काटकर बिना छिले तरासे उसमें सुराख करके बाहीं सेरवे पोंख दिये गये है। एक बाहीं और एक सेरवा बाँस के है। दुसरी बाहीं ठाकुर चंदनसिंह के बगीचे से अमरूद की शाखा काटकर बनाई गयी है और दुसरे सेरवे की जगह लोहे का जंग खाया सरिया लगा है। चारपाई के आगे बाण तुट चुके हैं वे झालर की मानिंद नीचे झूल रहे हैं। महकु इस चारपाई पर टाट बिच्छाकर ठाठ से सोता है। यह तत्कालीन किसान और मजदूर की गरीबी का ऐसा चित्र है जिससे उसके जीवन में छायी गरीबी कल्पना सहज ही की जा सकती है। ठाकुरों के भी छोटे किसान वर्ग की स्थिति इससे कुछ अलग नहीं है। जिसे रतनु और चंपा के माध्यम से जाना जा सकत है। जेल से आया रतनु, पूस की हाड कंपा देनेवाली थंड, तीन दिन से लगी झडी, चंपा की उपकती कोठरी और तेज बारीश में उसकी राट में ही गारे से मरंमत इस सब के बीच चंपा का जीवट यह सारा चित्रण रोमहर्षक है। जिस उन स्थितियों के भोगता और प्रत्यक्षदर्शी ही अधिक गरराई से महसूस कर सकते है। निश्चित ही यह त्यागी के कथाकार का अनुभूत चित्रण है।

'जमीन' रूढार्थ में आंचलिक उपन्यास नहीं है किंतु जिस क्षेत्र विशेष मेरठ, मवाना को वह कथा भूमी के रूप में अपनाता है, उसका अत्यंत जीवंत और गहन चित्रण यहाँ प्राप्त होता है। वहाँ के लोकाचार जातीय स्मृतियाँ, लोकविश्वास, अंधविश्वास राहरिति, तिज तौवार वहाँ की किसानी की ढंग फसन बोने की प्रक्रिया गाय-बैल, भैंस, खेत खलिहान सभी में गजब सी स्वाभाविकता है।

संदर्भ

१. जमीन पृ. १५
२. वही, पृ. ५१